NALANDA OPEN UNIVERSITY

Course : M.A Psychology, Part-I

Paper : Paper-VIII

Prepared by : Dr. (Prof.) Prabha Shukla
Retd. Professor of Psychology, Patna University and
Chief Co-ordinator, School of Social Sciences,
Nalanda Open University

Topic : व्यक्तित्व निर्धारण या मापन की समस्याएं
(Issues in Personality Assessment or Measurement)

व्यक्तित्व निर्धारण या मापन की समस्याएं
(Issues in Personality Assessment or Measurement)

2.1 परिचय (Introduction)

'**परसोनालिटी**' शब्द वास्तव में लैटिन **परसोना** से निकला है जिसकी परिभाषा विभिन्न मनोवैज्ञानिकों ने अपने-अपने सैद्धान्तिक दृष्टिकोणों के आलोक में दी है। **आलपोर्ट** (1937) के अनुसार, ''व्यक्ति के अन्दर उन मनोदैहिक शीलगुणों के गत्यात्मक संगठन को व्यक्तित्व कहते हैं जो उसके वातावरण के प्रति उसके अपूर्व समायोजन को निर्धारित करते हैं।'' उन्होंने 1961 में इस परिभाषा को परिमार्जित करते हुए कहा "व्यक्ति के अन्दर उन मनोदैहिक शीलगुणों के गत्यात्मक संगठन को व्यक्तित्व कहते हैं जो उसके विशिष्ट व्यवहार तथा विचार को निर्धारित करते हैं ।" कैटेल (1950) ने कहा "व्यक्तित्व वह है जो यह भविष्यवाणी करता है कि कोई व्यक्ति किसी निश्चित परिस्थिति में क्या करेगा।" इसी तरह **मर्रे** (1948) ने कहा, "जन्म से लेकर मृत्यु तक मस्तिष्क में होने वाली समस्त संगठित शासकीय प्रक्रियाओं की श्रेणी को व्यक्तित्व कहते हैं।" **फ्रायड** (1920) के अनुसार, इड, ईगो तथा सुपर ईगो के संगठन को व्यक्तित्व कहते हैं। **एडलर** (1937) के अनुसार जीवन लक्ष्य सहित जीवन की समस्याओं के प्रति प्रतिक्रिया करने के विशिष्ट ढंग अथवा जीवन-शैली को व्यक्तित्व कहते हैं। इसी तरह **युंग** (1929) के अनुसार ईगो व्यक्तित्व तथा जातीय अचेतन, ग्रन्थियों, संस्कारों, परसोना तथा एनिमा के समाकलन को व्यक्तित्व कहते हैं ।

इसी तरह व्यक्तित्व की अनेक परिभाषाएँ मनोवैज्ञानिकों ने प्रस्तुत की है— **मार्टन प्रिंस** (1924) के अनुसार — "व्यक्तित्व व्यक्ति के सभी जैविक, जन्मजात प्रकृति, मनोवेग, अभिलाषा, मूलप्रवृत्ति तथा अर्जित प्रकृति एवं प्रवृत्ति के योग को कहते हैं ।" **वाट्सन** (1924) के शब्दों में — "विश्वसनीय सूचनाएँ प्राप्त करने हेतु एक लम्बे समय तक देखी गई आदतों एवं आदत तत्त्वों के योगफल को ही व्यक्तित्व कहते हैं।" **बोरिंग** (1950) के अनुसार — "वातावरण के साथ सामान्य एवं स्थायी समायोजन ही व्यक्तित्व हैं ।" **परविन** (1971) के विचार में — "व्यक्तित्व किसी व्यक्ति या व्यक्तियों के उन रचनात्मक एवं गत्यात्मक गुणों का प्रतिनिधित्व करता है, जो किसी परिस्थिति के प्रति विशिष्ट प्रतिक्रियाओं द्वारा परिलक्षित होते हैं ।" **बायर्ने** (1974) के अनुसार — "किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व को वैयक्तिक विभिन्नता के सभी अपेक्षाकृत स्थायी पहलुओं के संयोग, जिन पर उनको मांपा जा सकता है, के रूप में परिभाषित किया जा सकता है ।"

2.2 व्यक्तित्व का स्वरूप (Nature of Personality)

उपर्युक्त परिभाषाएँ व्यक्तित्व के भिन्न-भिन्न पक्षों पर केन्द्रित हैं। वास्तव में व्यक्तित्व के अन्तर्गत व्यक्ति की बाह्य एवं आन्तरिक समस्त विशेषताएँ आती हैं, और उनमें पारस्परिक समन्वय पाया जाता है । आधुनिक मनोविज्ञान में व्यक्तित्व के बाह्य एवं आन्तरिक दोनों पक्षों के समाकलित रूप को स्वीकार किया गया है । इस दिशा में **जी.डब्ल्यू. आलपोर्ट** (१९३७) का प्रयास अत्यन्त सराहनीय है । आलपोर्ट ने Personality की छोटी-बड़ी 50 परिभाषाओं का विश्लेषण करके अपनी परिभाषा प्रस्तुत की। इस परिभाषा के अनुसार "व्यक्तित्व व्यक्ति के भीतर उन मनोदैहिक गुणों का गत्यात्मक संगठन है, जो वातावरण के प्रति उसके अपूर्व समायोजन को निर्धारित करता है।" यह परिभाषा व्यक्तित्व के स्वरूप की व्याख्या करने में अधिक सफल, संतोषजनक तथा समग्र है ।

प्रस्तुत परिभाषाओं के विश्लेषण से व्यक्तित्व के स्वरूप के सम्बन्ध में निम्नलिखित बातें स्पष्ट होती हैं —

(1) व्यक्तित्व का सम्बन्ध शारीरिक तथा मानसिक शीलगुणों से हैं। किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व को निर्धारित करते समय इन दोनों तरह के शीलगुणों पर ध्यान देना आवश्यक होता है ।

(2) व्यक्तित्व मनोदैहिक शीलगुणों का योगफल नहीं है, बल्कि एक विशेष संगठन है। इसी विशेष संगठन के कारण प्रत्येक व्यक्ति का व्यक्तित्व अपने आप में अपूर्व होता है ।

(3) मनोदैहिक शीलगुणों का यह संगठन गत्यात्मक होता है। परिस्थिति के अनुकूल व्यक्तित्व का यह संगठन कुछ अंशों में बदल सकता है।

(4) मनोदैहिक शीलगुणों का संगठन एक ओर गत्यात्मक तथा दूसरी ओर स्थिर होता है। अधिकांश व्यक्तियों का व्यक्तित्व अधिकांश परिस्थितियों में स्थिर रहता है केवल कुछ विशेष परिस्थितियों में ही बदलता है ।

(5) मनोदैहिक शीलगुणों के विशेष संगठन के कारण ही समान वातावरण में भिन्न-भिन्न व्यक्तियों का समायोजन भिन्न-भिन्न हुआ करता है। इसी कारण व्यक्ति के व्यवहार का ढंग, समायोजन या पारस्परिक क्रिया अपूर्व बन जाती है।

निष्कर्ष तौर पर यह कहा जा सकता है कि व्यक्तित्व में भिन्न-भिन्न शीलगुणों का एक ऐसा गत्यात्मक संगठन होता है जिसके कारण व्यक्ति का व्यवहार तथा विचार किसी भी वातावरण में अपने ढंग का अर्थात् अपूर्व होता है ।

2.3 व्यक्तित्व निर्धारण या मापन का अर्थ (Meaning of Personality Assessment or Measurement)

व्यक्तित्व की माप से तात्पर्य व्यक्तित्व के शीलगुणों के बारे में पता लगाकर यह निश्चित करना होता है कि कहाँ तक वे संगठित या विसंगठित हैं ? किसी भी व्यक्ति के भिन्न-भिन्न शीलगुण जब आपस में संगठित होते हैं, तो इससे व्यक्ति का व्यवहार सामान्य होता है, परन्तु यदि उसके शीलगुण विसंगठित होते हैं तो व्यक्ति का व्यवहार असामान्य हो जाता है। व्यक्तित्व मापन के सैद्धान्तिक तथा व्यवहारिक उद्देश्य हैं। मनोवैज्ञानिकों के अनुसार व्यक्तित्व-मापन से व्यक्तित्व के विकास तथा उसके स्वरूप से संबंधित बहुत से ज्ञान प्राप्त होते हैं जिससे इस क्षेत्र में शोध करने तथा नये-नये सिद्धान्तों का प्रतिपादन करने में मदद मिलती है। इस सैद्धान्तिक उद्देश्य के अलावा व्यक्तित्व मापन के कुछ व्यावहारिक उद्देश्य भी हैं। जैसे- व्यक्ति मापन से यह पता चलता है कि व्यक्तित्व के किस-किस शीलगुण की शक्ति कितनी है और किस शीलगुण की कमी से व्यक्ति को समायोजन करने में दिक्कत होती है। अत: व्यक्तित्व मापन करके वैसे व्यक्तियों जिन्हें समायोजन में व्यक्तिगत कठिनाई होती है, की कठिनाइयों को दूर करने में मदद की जाती है। व्यक्तित्व मापन का दूसरा प्रमुख अनुप्रयोग नेता का चयन तथा उत्तरदायी पदों के लिए सही व्यक्तियों का चयन करने में है ।

इस प्रकार व्यक्तिगत मापन के दो अर्थ हैं - (i) व्यक्तित्व-मापन का एक अर्थ व्यक्ति के उन शीलगुणों का पता लगाना है, जिनसे उसका व्यक्तित्व संरचित है। न केवल व्यक्तित्व-निर्माण में निहित शीलगुणों का पता लगाना है, बल्कि यह भी देखना है कि उनमें कौन से शीलगुण प्रधान हैं? (ii) दूसरा अर्थ व्यक्तित्व के ढाँचों या प्रकार का पता लगाना है। यह देखना है कि शीलगुण किस ढंग से तथा किस सीमा तक संगठित या विसंगठित हैं? शीलगुणों की संख्या तथा गुण में समानता होते हुए भी विशेष संगठन के कारण दो व्यक्तियों के व्यक्तित्व भिन्न होते हैं ।

2.4 व्यक्तित्व-मापन या निर्धारण के उद्देश्य (Objectives of Personality Measurement or Assessment)

व्यक्तित्व-मापन के उद्देश्य के सम्बन्ध में भिन्न-भिन्न मनोवैज्ञानिकों के विचार उनकी सैद्धान्तिक भिन्नता के कारण भिन्न-भिन्न हैं । विशेषक-सिद्धान्तवादियों के अनुसार व्यक्तित्व-मापन का उद्देश्य व्यक्तित्व की संरचना करने वाले शीलगुणों का पता लगाना है ताकि व्यक्ति के व्यवहार एवं समायोजन के सम्बन्ध में भविष्यवाणी की जा सके। कारण, व्यक्ति के व्यवहार एवं समायोजन का निर्धारण शीलगुणों के द्वारा होता है। **प्रकार**- सिद्धान्तवादियों के अनुसार व्यक्तित्व-मापन का उद्देश्य व्यक्तित्व प्रकार की खोज करना है। यह देखना है कि व्यक्ति अन्तर्मुखी व्यक्तित्व का है, बहिर्मुखी व्यक्तित्व का है, लज्जालु व्यक्तित्व का है, आक्रमणशील व्यक्तित्व का है या कुछ और है। कारण, व्यक्ति के व्यवहार एवं समायोजन का आधार शीलगुण नहीं, बल्कि शीलगुण का प्रकार है। मनोविश्लेषणवादियों के अनुसार व्यक्तित्व मापन का उद्देश्य अचेतन प्रेरकों, आवश्यकताओं, संवेगों तथा संघर्षों की जानकारी प्राप्त करना है । कारण, व्यक्ति के व्यवहार एवं समायोजन के प्रधान निर्धारक अचेतन घटक हैं। सामाजिक शिक्षण सिद्धान्तवादियों के अनुसार व्यक्तित्व मापन का उद्देश्य व्यवहार-परिवर्तन है। उनके अनुसार उद्दीपन परिस्थितियों तथा व्यक्ति की प्रतिक्रिया क्षमताओं तथा आत्मप्रबलन का मापन करके व्यक्ति के व्यवहार को परिमार्जित किया जा सकता है । मानवीय सिद्धान्तवादियों के अनुसार व्यक्तित्व मापन का अभिप्राय व्यक्ति के

सकारात्मक स्वभाव, आत्म-कार्यान्वयन तथा आत्म-धारणा को खोज निकालना है, क्योंकि व्यक्ति के व्यवहार एवं समायोजन का मौलिक निर्धारक उसका अपना विशेष आत्मन है ।

इसके अतिरिक्त व्यक्तित्व निर्धारण निम्नांकित उद्देश्यों की पूर्ति हेतु किया जाता है-

(1) **उपर्युक्त शैक्षिक एवं व्यावसायिक चयन में विद्यार्थियों की सहायता करने के लिए**—व्यक्ति की वैयक्तिक, शैक्षिक एवं व्यावसायिक सफलता तथा समायोजन में उसके व्यक्तित्व का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। इन क्षेत्रों में व्यक्ति की सफलता, काफी सीमा तक व्यक्तित्व कारकों द्वारा निर्धारित होती है। इसलिए व्यक्ति के व्यक्तित्व का मापन एवं विश्लेषण करके यह निदान करना अत्यन्त आवश्यक एवं महत्त्वपूर्ण है कि व्यक्ति में वे शीलगुण है। या नहीं, जो उसके पाठ्यक्रम अथवा व्यवसाय समायोजन के लिए आवश्यक हैं ।

(2) **व्यक्ति के संवेगात्मक द्वन्द्वों का समाधान करने में सहायता करने के लिए**— व्यक्तित्व सम्बन्धी निदान उस समय अत्यन्त आवश्यक हो जाता है जब शैक्षिक एवं व्यावसायिक चयन के साथ समायोजन स्थापित करने में व्यक्ति को कठिनाई का सामना करना पड़ता है और उसमें अनेक संवेगात्मक अन्तर्द्वन्द्व उत्पन्न हो जाते हैं जिनके बारे में उसे कोई जानकारी नहीं होती । व्यक्तित्व निदान द्वारा जब उसके वैयक्तिक मानसिक द्वन्द्व के कारणों का पता चल जाता है तो उसके लिए अपनी समस्या को अपने ढंग से सुलझा पाना सम्भव हो सकता है ।

(3) **अध्यापकों एवं परामर्शदाताओं की सहायता करने के लिए** — निर्देशन एवं परामर्शन के उद्देश्य से अध्यापकों एवं परामर्शदाताओं के लिए यह आवश्यक होता है कि वे अपने विद्यार्थियों की शारीरिक क्षमताओं, सीमाओं, आकांक्षाओं तथा व्यक्तित्व शीलगुणों को जाने क्योंकि ये जीवन के विभिन्न पक्षों में उनकी सफलता-असफलता को काफी सीमा तक निर्धारित करते हैं। विविध तकनीकों द्वारा व्यक्तित्व परीक्षण करके इन पक्षों के सम्बन्ध में सूचना प्राप्त की जा सकती है और इन सूचनाओं के आधार पर व्यक्ति की सहायता की जा सकती है ।

(4) **उपर्युक्त कार्मिक चयन में नियोक्ता की सहायता करने के लिए** — प्रत्येक प्रकार के कार्य के लिए अलग-अलग प्रकार की व्यक्तित्व विशेषताएँ अपेक्षित होती हैं। अपने किसी कार्य के लिए कर्मचारी नियुक्त करते समय नियोक्ता के लिए यह जानना आवश्यक होता है कि उस कार्य के लिए उपयुक्त एवं अपेक्षित गुण उस व्यक्ति में है अथवा नहीं। इस जानकारी के आधार पर वह उपयुक्त चयन कर सकता है ।

(5) **चिकित्सा मनोवैज्ञानिक की सहायता करने के लिए** — एक मनोचिकित्सक अपने रोगी के रोग के विश्लेषण एवं उसके कारणों को समझने के लिए उसके व्यक्तित्व की नैदानिक जाँच अवश्य करता है। इस प्रकार की जाँच से मनोरोगियों के अनेक लक्षण, उनके रोग की गम्भीरता आदि की स्पष्ट जानकारी प्राप्त हो जाती है जो मनोचिकित्सक को उपयुक्त चिकित्सा विधि का चयन करने तथा उपयोग करने में सहायता पहुँचाती है।

2.5 व्यक्तित्व निर्धारण का महत्त्व (Importance of Personality Assessment)

व्यक्तित्व-मापन के उद्देश्यों के सम्बन्ध में मनोवैज्ञानिकों के बीच स्पष्ट अन्तर होते हुए भी, व्यक्तित्व-मापन के व्यवहारिक महत्त्व को सभी स्वीकार करते हैं। मानव-जीवन के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में व्यक्तित्व-मापन के महत्त्व एवं लाभ देखे जाते हैं। कर्मचारी चयन, व्यावसायिक निर्देशन, शैक्षिक निर्देशन, संवेगात्मक समस्याओं के उपचार, अपराधियों के उत्तरदायित्व तथा सुधार की सम्भावना से सम्बन्धित निर्णय आदि क्षेत्रों में व्यक्तित्व-मापन से हम लाभान्वित हो रहे हैं ।

2.6 व्यक्तित्व निर्धारण की समस्याएँ (Issues in Personality Assessment)

व्यक्तित्व-निर्धारण या मापन की कई समस्याएँ हैं जिन्हें सुविधा के लिए निम्नलिखित भागों में बाँटा जा सकता है–

2.6.1 अभिधारणा पर आधारित समस्याएँ (Issues based on assumptions)

व्यक्तित्व के सिद्धान्तों के अवधारणाओं में मतभेद के कारण भी इनके निर्धारण में समस्याएँ पैदा होती हैं। इन्हें निम्न रूप में देखा जा सकता है -

(1) **स्वतंत्रता-नियतिवाद** (Freedom-Determinism) — यह व्यक्तित्व के निर्धारण की महत्वपूर्ण समस्या है। व्यक्ति अपने व्यवहार को निर्धारित करने में स्वतंत्र है अथवा नहीं है। दूसरे शब्दों, में व्यक्ति के व्यवहार की उत्पत्ति उसकी अपनी इच्छा से होती है अथवा किसी बाह्य शक्ति से। इस समस्या के प्रति दो तरह के सिद्धान्त हैं। एक तरह के सिद्धान्तों के अनुसार व्यक्ति व्यवहार करने में स्वतंत्र होता है । वह अपनी इच्छा से तथा चेतन रूप से किसी व्यवहार को करता है। दूसरी तरह के सिद्धान्तों के अनुसार व्यवहार करने में वह स्वतंत्र नहीं है। वह बाह्य परिस्थितियों या कारकों तथा अचेतन प्रेरणाओं से प्रभावित होकर कोई व्यवहार करता है। एक ओर **रोजर्स** तथा **मैसलो** स्वतंत्रता के समर्थक हैं तो दूसरी ओर **बैण्डूरा** तथा फ्रायडवादी नियतिवाद के समर्थक हैं ।

(2) **विवेकपूर्णता-अविवेकपूर्णता** (Rationality-Irrationality) — व्यक्तित्व के निर्धारण की दूसरी समस्या है। यहाँ विचार-वस्तु या समस्या यह है कि व्यक्ति का व्यवहार तर्कसंगत होता है अथवा अतर्कसंगत होता है। कुछ सिद्धान्त इसे अतर्कसंगत मानते हैं। **केली** (1963) आदि संज्ञानात्मक सिद्धान्ती के अनुसार मनुष्य मूलत: विवेकपूर्ण होता है। अत: वह अपने विवेक के अनुकूल व्यवहार करता है। अत: उसके व्यवहार का विवेकपूर्ण होना स्वाभाविक है। इसके विपरीत मनोविश्लेषणवादी सिद्धान्तीयों मनुष्य को मूलत: अविवेकी मानते हैं और कहते हैं कि व्यक्ति अचेतन शक्तियों से प्रभावित होकर व्यवहार करते हैं। अचेतन शक्तियाँ अविवेकी होती हैं। इसलिए व्यक्ति भी अविवेकी हुआ करते हैं ।

(3) **पूर्णतावाद-तत्त्ववाद** (Holism-Elementalism) — व्यक्तित्व निर्धारण की तीसरी मुख्य समस्या पूर्णतावाद-तत्त्ववाद से संबंधित है। **पूर्णतावाद-तत्त्ववाद विमा** पर भी व्यक्तित्व के सिद्धान्त भिन्न दृष्टिकोण रखते हैं। पूर्णतावाद के समर्थकों का कहना कि मानव व्यवहार को सम्पूर्ण से ही समझा जा सकता है। मानव व्यवहार को यदि विभिन्न खंडों अथवा तत्त्वों में विभाजित करके समझने का प्रयास किया जाये तो मानव स्वभाव का सही चित्र समझना सम्भव नहीं हो सकेगा। इसके विपरीत कुछ दूसरे सिद्धान्ती मानव व्यवहार को सही रूप में समझने के लिए तत्त्ववाद पर बल देते हैं। उनके अनुसार मानव स्वभाव को तात्विक स्तर पर ही समुचित रूप में समझा जा सकता है। एक ओर गेस्टाल्ट सिद्धान्त पूर्णता का समर्थन करता है तो दूसरी ओर व्यवहारवादी सिद्धान्त तत्त्ववाद पर बल देता है ।

(4) **शरीर गठनात्मक-पर्यावरणीयता** (Constitutionism-Environmentalism)— यह व्यक्तित्व निधारण की महत्त्वपूर्ण समस्या है। यहाँ मूल समस्या यह है कि मानव स्वभाव तथा मानव व्यवहार को निर्धारित करने में शारीरिक गठन की भूमिका होती है अथवा वातावरण (पर्यावरण) का हाथ होता है। एक ओर हिपोक्रेट्स, क्रेश्मर, शेल्डन आदि शरीर-गठन पर बल देते हैं तो दूसरी ओर **वाटन, स्किनर, बैण्डूरा** आदि पर्यावरण पर बल देते हैं। आधुनिक मनोवैज्ञानिक मानव स्वभाव या मानव व्यवहार को इन दोनों तरह के कारकों का सम्मिलित परिणाम मानते हैं।

(5) **परिवर्तनशीलता-अपरिवर्तनशीलता** (Changeability-Unchangeability) — व्यक्तित्व निधारण की मुख्य समस्या यह है कि व्यक्तित्व परिवर्तनशील है अथवा अपरिवर्तनशील है। कुछ सिद्धान्ती व्यक्तित्व को परिवर्तनशील मानते हैं। उनके अनुसार जन्म से आरंभ होकर व्यक्तित्व का विकास कई अवस्थाओं से गुजरता है और प्रत्येक अवस्था में कुछ आवश्यक परिवर्तन घटित होते हैं। इस विचार के समर्थक **आलपोर्ट, इरिक्सन** आदि हैं। दूसरी ओर कुछ सिद्धान्ती व्यक्तित्व को अपरिवर्तनशील मानते हैं। उनके अनुसार बचपन में जिस तरह का व्यक्तित्व संगठित हो जाता है, वह अन्य सभी अवस्थाओं में प्रभावी बना रहता है और वही व्यक्ति के व्यवहार का मौलिक निर्धारक बना रहता है । इस विचार के समर्थक **फ्रायड, ऐडलर** आदि हैं।

(6) **आत्मनिष्ठता-वस्तुनिष्ठता** (Subjectivity-Objectivity) — व्यक्तित्व निर्धारण में एक समस्या

यह है कि व्यक्ति के व्यवहार का निर्धारण आन्तरिक अनुभूतियों से होता है। अथवा बाह्य एवं वस्तुनिष्ठ कारकों से होता है। इस समस्या को लेकर भी व्यक्तित्व के सिद्धान्तवादियों में मतभेद है। एक ओर कुछ सिद्धान्तवादी व्यवहार के निर्धारण में आत्मगत कारकों पर बल देते हैं तो दूसरी ओर कुछ सिद्धान्तवादी बाह्य एवं वस्तुनिष्ठ कारकों पर बल देते हैं। जहाँ **रोजर्स** आदि आन्तरिक एवं आत्मनिष्ठ कारकों को व्यवहार का निर्धारक मानते हैं, वहाँ **स्किनर, बैण्डूरा** आदि बाह्य एवं वस्तुनिष्ठ कारकों को व्यवहार का निर्धारक मानते हैं। आधुनिक मनोवैज्ञानिक इन दोनों तरह के विचारों को एक-दूसरे का सम्पूरक मानते हैं ।

(7) **समस्थिति-विषमस्थिति** (Homeostasis-Heterostasis) — इस संदर्भ में व्यक्तित्व के सिद्धान्तियों या सिद्धान्तवादियों के समक्ष मुख्य समस्या यह है कि व्यक्ति में कौन-सी प्रेरणा ऐसी है जो उसके व्यवहार को निधरित करता है। कुछ सिद्धान्ती इस विचार के पक्ष में हैं कि मूलत: व्यक्ति अपने तनाव को कम करने तथा आन्तरिक संतुलन बनाये रखने के लिए प्रेरित रहता है। इसे समस्थिति कहते हैं। दूसरी ओर कुछ सिद्धान्ती इस विचार के समर्थक हैं कि व्यक्ति अपने विकास तथा आत्म-कार्यान्वयन को प्राप्त करने हेतु प्रेरित रहता है। इसे विषमस्थिति कहते हैं ।

(8) **अप्रत्यक्षता-प्रतिक्रियाक्षमता** (च्तवंबजपअपजल.त्मंबजपअपजल) ख्र व्यक्तित्व सिद्धान्तियों के सामने समस्या यह है कि मानव व्यवहार का स्रोत व्यक्ति की आन्तरिक प्रेरणा या कल्पना है अथवा बाह्य उद्दीपन हैं। कुछ सिद्धान्तवादी इस विचार के पक्ष में हैं कि व्यवहार की उत्पत्ति का स्रोत व्यक्ति की अपनी कल्पना, इच्छा या प्रेरणा है। इस विचारधारा को अप्रत्यक्षता कहते हैं, जिसके समर्थक **रोजर्स, मैसलो** आदि हैं। इसके विपरीत कुछ अन्य सिद्धान्ती इस विचार के समर्थक हैं कि व्यक्ति के व्यवहार की उत्पत्ति बाह्य उद्दीपनों के प्रति प्रतिक्रिया के रूप में होती है। इस विचारधारा को प्रतिक्रियाक्षमता कहते हैं। इसके मानने वालों में **किम्बल (1953), स्किनर (1955)** आदि के नाम उल्लेखनीय हैं ।

(9) **ज्ञेता-अज्ञेता** (Knowability-Unknowability) — व्यक्तित्व-सिद्धान्तियों के सामने एक विवादग्रस्त समस्या यह है कि मानव स्वभाव को वस्तुनिष्ठ रूप से जाना जा सकता है अथवा नहीं। व्यवहारवादी मनोवैज्ञानिक जैसे **वाटसन, स्किनर** आदि इस विचार के समर्थक हैं कि मानव स्वभाव को वस्तुनिष्ठ रूप से जाना जा सकता है तथा मानव व्यवहार पर आनुभविक अध्ययन किया जा सकता है। दूसरी ओर **रोजर्स, मैसलो** आदि इस विचार के समर्थक हैं कि मानव स्वभाव वास्तव में अज्ञेय है। इस पर वैज्ञानिक अध्ययन या आनुभविक अध्ययन सम्भव नहीं है ।

इस प्रकार स्पष्ट हुआ कि व्यक्तित्व मनोवैज्ञानिकों के समक्ष उपर्युक्त कई समस्याएँ हैं, जिनके समाधान हेतु व्यक्तित्व के विभिन्न सिद्धान्त विकसित हुए ।

2.6.2 मापन की विधि से संबंधित समस्याएँ (Issues Related to Methods of Measurement)

(1) **मापन में अप्रत्यक्षता की समस्या** — अधिकतर मनोवैज्ञानिक एवं शैक्षिक मापन अप्रत्यक्ष होते हैं। इसका प्रधान कारण यह है कि अधिकतर मनोवैज्ञानिक एवं शैक्षिक चर का स्वरूप ऐसा होता है जिसे व्यक्ति प्रत्यक्ष रूप से देख नहीं सकता है। जैसे, मान लिया जाए कि कोई शोधकर्त्ता किसी व्यक्ति की मनोवृति (शिक्षक के प्रति) का अध्ययन करना चाहता है। इसके लिए उसे मनोवृत्ति का मापन करना होगा । यहाँ मनोवृति एक ऐसा चर है जिसे शोधकर्त्ता प्रत्यक्ष रूप से तो देख नहीं सकता है। फलत: वह इसका मापन करने के लिए उनके व्यवहारों एवं अनुक्रियाओं का अध्ययन करेगा । इस तरह से मनोवृति का मापन परोक्ष ढंग से करेगा । मापन में अप्रत्यक्षता होने से कई तरह की समस्याएँ उत्पन्न हो जाती हैं। अन्य बातों के अलावा इसकी विश्वसनीयता एवं वैधता गंभीर रूप से प्रभावित हो जाती है।

(2) **मापन में अधूरेपन से संबंधित समस्याएँ** — मनोविज्ञान तथा शिक्षा के क्षेत्र का मापन सामान्यत: अधूरा होता है और यही कारण है कि किसी भी मनोवैज्ञानिक एवं शैक्षिक चर का मापन अधूरा ही रह जाता है

जो अपने आप में शोधकर्त्ता के लिए एक गंभीर समस्या होती है। इस तरह के अधूरा मापन से शोधकर्ता न तो अपने शोध समस्या के बारे में कोई अंतिम निष्कर्ष पर पहुँच पाता है और न ही अधूरे निष्कर्ष को जीवसंख्या के लिए वह सामान्यीकरण ही कर पायेगा। जैसे, मान लिया जाए कि शिक्षक छात्रों की बुद्धि मापने के लिए कई बुद्धि परीक्षण का निर्माण करते हैं। बुद्धि परीक्षण में 20 एकांश भी हो सकते हैं या 100 एकांश भी हो सकते हैं, परन्तु वास्तव में उनकी संख्या कितनी होनी चाहिए इसकी कोई सीमा का निर्धारण नहीं किया गया है। इसलिए बुद्धि मापने का यह प्रयास अधूरा ही होगा। ऐसी परिस्थिति में मापन से कोई विशेष मतलब सिद्ध नहीं होगा और साथ-ही-साथ बुद्धि के बारे में भी जो सूचकांक प्राप्त होगा, वह अर्थहीन होगा।

(3) मापन में सापेक्ष की समस्या — मनोवैज्ञानिक मापन तथा शैक्षिक मापन सापेक्ष होते हैं न कि स्वतंत्र या निरपेक्ष । इससे ऐसे मापनों के आधार पर सही-सही निष्कर्ष ज्ञात करना संभव नहीं हो पाता है। जैसे, मान लिया जाए कि 10वीं कक्षा की छात्राओं पर शिक्षक ने दो परीक्षणों का क्रियान्वयन किया - अंग्रेजी ज्ञान परीक्षण तथा अंकगणितीय ज्ञान परीक्षण । थोड़ी देर के लिए मान लिया जाए कि गीता को हिन्दी ज्ञान परीक्षण में 68% अंक आया जबकि गणित में मात्र 0% अंक आए। इस मापन के आधार पर क्या यह कहा जा सकता है कि गीता का निष्पादन हिन्दी में अच्छा है? इसका उत्तर विश्वास के साथ नहीं दिया जा सकता है जब तक कि उसके अंकों की तुलना अन्य छात्राओं के अंकों से न कर ली जाए। ऐसा संभव है कि मात्र गीता को ही 68% अंक हिन्दी परीक्षण में आया हो और अन्य छात्राओं का अंक इससे काफी कम हो या ऐसा भी हो सकता है कि 68% अंक हिन्दी परीक्षण पर आने वाले अंकों में से सबसे कम हो। स्पष्ट हुआ कि यहाँ मापन निरपेक्ष या स्वतंत्र न होकर सापेक्ष है और यही कारण है कि गीता के मात्र हिन्दी के अंक को देखकर गीता के हिन्दी के ज्ञान के बारे में कोई सही-सही पूर्वानुमान नहीं लगाया जा सकता है। उसी तरह से क्या यह कहा जा सकता है कि गीता का गणित का ज्ञान शून्य है या उसे गणित का ज्ञान कुछ नहीं है। ऐसा भी नहीं कहा जा सकता है क्योंकि गीता द्वारा प्राप्त 0% अंक एक वास्तविक बिन्दु नहीं है। इन उदाहरणों से यह स्पष्ट हो जाता है कि मापन सापेक्ष होने से सही-सही पूर्वानुमान करना संभव नहीं हो पाता है ।

(4) मापन में होनेवाली त्रुटियों से संबंधित समस्याएँ — मापन चाहे प्राकृतिक विज्ञान का हो या व्यवहारपरक विज्ञान का हो, कभी भी शुद्ध नहीं होता है क्योंकि उसमें किसी-न-किसी प्रकार की त्रुटि अवश्य हो जाती है। जैसे, मान लिया जाय कि कोई महिला अपना वजन कराती है और वह पाती है कि उसका वजन 70 किलोग्राम है। यह मापन जो प्राकृतिक विज्ञान के क्षेत्र का मापन है, क्या शुद्ध है? यह शुद्ध हो भी सकता है या नहीं भी हो सकता है। ऐसा संभव है कि मापन की मशीन दोषपूर्ण हो या महिला गर्भवती हो। उसी तरह से अगर किसी छात्र का बुद्धि प्राप्तांक किसी बुद्धि परीक्षण पर 60 आता है, तो क्या इसे शुद्ध मापन माना जा सकता है। विश्वास के साथ इसका उत्तर नहीं दिया जा सकता है क्योंकि संभव है कि परीक्षण पर एकांशों का उत्तर देते समय छात्र ध्यानभंगता का शिकार हुआ हो, या परीक्षण के एकांशों के उत्तर देते समय छात्र घबड़ा गया हो तथा ऐसा भी संभव है कि पिछले दिनों उसके साथ कोई ऐसी अप्रिय घटना घटी हो, जिसके प्रभाव से वह काफी परेशान हो आदि। कहने का तात्पर्य यह है कि मनोवैज्ञानिक मापन कई कारणों से शुद्ध न होकर त्रुटिग्रस्त हो जाता है। परिणामस्वरूप उससे कोई सही-सही अर्थ निकालना संभव नहीं हो पाता है ।

2.7 व्यक्तित्व निर्धारण की अन्य समस्याएँ (Other issues in Personality Assessment)

व्यक्तित्व का परीक्षण करने में कुछ अन्य प्रकार की कठिनाइयाँ आती हैं -

(1) सूचना को व्यक्त करने की व्यक्ति की अनिच्छा — किसी व्यक्ति का व्यक्तित्व उसके विशिष्ट व्यवहारों, शीलगुणों तथा पर्यावरण के प्रति अनुक्रिया करने के उसके स्थायी तरीके को व्यक्त करता है । व्यक्तित्व मापन में हमारा उद्देश्य व्यक्ति के सर्वश्रेष्ठ व्यवहार का मापन करना नहीं होता है। हमारा उद्देश्य होता है उसके विशेष व्यवहार को मापना, सामान्य दशाओं में वह साधारणत: जिस प्रकार का व्यवहार करता है, उसको जानना

। जब व्यक्ति किसी प्रश्नावली का उत्तर देता है तो वह अपने उत्तरों द्वारा अपने आपको ऐसे व्यक्ति के रूप में प्रदर्शित करने से बचता है जो उसे खराब प्रदर्शित करे। वह अपने बारे में सही सूचना प्रदान नहीं करता। अत: व्यक्तित्व के किसी भी मापन में हमेशा इस बात की सम्भावना रहती है कि जिसके व्यक्तित्व का मापन किया जा रहा है वह अपने व्यवहार के उन विशिष्ट तरीकों को प्रदर्शित नहीं कर रहा है जो साधारणतया वह प्रयुक्त करता है ।

(2) **संवेदनशील विषय-वस्तु** — व्यक्ति के व्यक्तित्व की सही-सही जानकारी प्राप्त करने के लिए प्राय: मनोवैज्ञानिक को व्यक्ति के जीवन के संवेदनशील क्षेत्रों, जैसे उसके जीवन का सांवेगिक समायोजन, अन्य व्यक्तियों से सम्बन्ध, वैवाहिक समायोजन, निजी पारिवारिक इतिहास, अभिवृत्ति आदि के विषय में प्रश्न पूछने पड़ते हैं। इस प्रकार के प्रश्नों से व्यक्ति की वैयक्तिक गोपनीयता के लिए खतरा उत्पन्न होता है ।

इस प्रकार हमने देखा की व्यक्तित्व के निर्धारण में उपरोक्त वर्णित कई समस्याएँ शामिल हैं।

2.8 सारांश (Summing-up)

मनोवैज्ञानिकों ने अपने-अपने तरीके से व्यक्तित्व को परिभाषित करने का प्रयास किया है लेकिन सबसे संतोषजनक परिभाषा **आलपोर्ट (१९३७)** ने प्रस्तुत किया है। परिभाषाओं के विश्लेषण से व्यक्तित्व के निम्नलिखित स्वरूप उभर कर सामने आते है।- (1) व्यक्तित्व का संबंध शारीरिक तथा मानसिक शीलगुणों से हैं (2) व्यक्तित्व मनोदैहिक शीलगुणों का योगफल न होकर एक विशेष संगठन है। (3) मनोदैहिक शीलगुणों का संगठन एक ओर गत्यात्मक तथा दूसरी ओर स्थिर होता है। (4) इसी विशेष संगठन के कारण व्यक्ति का अभियोजन भिन्न तथा व्यवहार अपूर्व होता है।

व्यक्तित्व मापन से तात्पर्य उन व्यक्तित्व शीलगुणों का पता लगाना है जिसके कारण व्यक्ति का व्यक्तित्व संगठित या असंगठित होता है। अत: व्यक्तित्व मापन के दो अर्थात् (1) व्यक्तित्व को संरचित करने वाले मुख्य शीलगुणों का पता लगाना, (2) इस बात का पता लगाना कि शीलगुण कितना हद तक संगठित या असंगठित है ?

व्यक्तित्व मापन के कई उद्देश्य हैं - (1) व्यक्तित्व रचना के मुख्य शीलगुणों का पता लगाना, (2) व्यक्तित्व के प्रकार की खोज करना, (3) व्यक्ति का सकारात्मक स्वभाव, आत्म कार्यान्वयन तथा आत्मधारणा को खोजना, (4) शैक्षिक तथा व्यवसायिक चयन में विद्यार्थियों की मदद करना । (5) व्यक्ति के संवेगात्मक द्वन्दों के समाधान में मदद करना। (6) अध्यापकों तथा परामर्शदाताओं की सहायता करना, (7) कार्मिक चयन में नियोक्ता की मदद करना एवं चिकित्सा मनोवैज्ञानिकों की मदद करना ।

इस प्रकार व्यक्तित्व मापन का महत्त्व कर्मचारी चयन, व्यवसायिक निर्देशन, शैक्षिक निर्देशन, संवेगात्मक समस्याओं के उपचार, अपराधियों के उत्तरदायित्व निर्धारित करने में होता है।

अब प्रश्न है कि व्यक्तित्व निर्धारण में कौन-कौन सी समस्याएँ हैं ? प्राय: देखा गया है सिद्धान्तों के अवधारणाओं में मतभेद के कारण इनके निर्धारण में समस्याएँ पैदा होती हैं। अवधारणा पर आधारित समस्याओं में निम्न मुख्य प्रकार हैं -

(1) स्वतंत्रता नियतिवाद की समस्या, (2) विवेकपूर्णता-अविवेकपूर्णता की समस्या, (3) पूर्णतावाद-तत्त्ववाद की समस्या, (4) शरीर गठनात्मक-पर्यावरणीयता की समस्या, (5) परिवर्तनशीलता-अपरिवर्तनशीलता की समस्या, (6) आत्मनिष्ठता-वस्तुनिष्ठता की समस्या, (7) समस्थिति-विषम स्थिति की समस्या, (8) अप्रत्यक्षता प्रतिक्रिया क्षमता की समस्या, (9) ज्ञेता-अज्ञेता की समस्या । इसी प्रकार मापन के विधि पर आधारित कई समस्याएँ हैं जैसे- (1) मापन में अप्रत्यक्षता की समस्या, (2) मापन में अधूरापन से संबंधित समस्या, (3) मापन में सापेक्ष की समस्या, (4) मापन में होने वाली त्रुटियों से संबंधित समस्या । इसकी सूचना को अव्यक्त करने की अनिच्छा तथा संवेदनशील मामले में सही उत्तर मिलने की समस्या भी महत्त्वपूर्ण है।

2.8 मॉडल प्रश्न (Model Question)

1. व्यक्तित्व के संप्रत्यय की परिभाषा दें । इसके स्वरूप का वर्णन करें ।

   Define the concept of personality. Describe its nature.

2. व्यक्तित्व परीक्षण का क्या अर्थ है? इसके उद्देश्यों एवं लाभों का वर्णन कीजिए।

   What do you understand by Personality Test ? Describe its objectives and advantages.

3. व्यक्तित्व मूल्यांकन की भिन्न-भिन्न समस्याओं पर प्रकाश डालिए।

   Throw light on the various issues in personality Assessment.

4. व्यक्तित्व मूल्यांकन के महत्व एवं सार्थकता की विवेचना कीजिए।

   Discuss the importance and significance of personality Assessment.

5. व्यक्तित्व मूल्यांकन की सीमाओं का विवेचन कीजिए।

   Discuss the limitations of personality Assessment.

6. व्यक्तित्व मूल्यांकन के आशयों (Implications) की विवेचना कीजिए ।

   Discuss the Implications of Personality Assessment